

सम्पादकीय

संस्कारहीनता के घातक दुष्परिणाम, नहीं रुक रहे महिलाओं पर होने वाले अपराध



आर्थिकी

वर्ष 2024-25 के बजट के तहत किसानों के कल्याण और कृषि को विकास का इंजन बनाने की रणनीति के तहत किसानों के हित में कृषि व ग्रामीण क्षेत्र की क्षमता के दोहन के जो अभूतपूर्व कदम आगे बढ़ाए गए हैं, उनसे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई जान फूंकी जा सकेगी। नि:संदेह सरकार ने कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर ध्यान केंद्रित किया है। कृषि व ग्रामीण विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दिए जाने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिल रही है। विश्व बैंक के द्वारा जारी 'इंडिया डेवलपमेंट अपडेट' रिपोर्ट में कहा गया है कि कृषि क्षेत्र में सुधार व ग्रामीण मांग में तेजी के चलते भारत की विकास दर 7 फीसदी के स्तर पर पहुंचते हुए दिखाई देगी।

आध्यात्मिक चेतना आखिर क्या है?



संकलित
दर्थना

आज मनुष्य अत्यधिक भौतिकवादी तथा लालची हो गया है। बलिदान, त्याग, संतोष, प्रज्ञा, चिंतन-मनन, मुक्ति और मोक्ष जैसे शब्द हमारे शब्दकोश से धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं, जो कि आध्यात्मिक मूल्यों के द्योतक रहे हैं। व्यापक उपभोगवादी संस्कृति तथा भोग-विलास से पोषित भौतिकवाद की नई उभरी संस्कृति ने आध्यात्मिक चेतना पर पर्दा डाल दिया है। धन-अर्जन, सत्ता तथा प्रसिद्धि की लालसा और सुखवादी जीवन-प्रणाली आज जीवन का परम लक्ष्य है। सभी धर्मों ने लालच को महापाप कहा है, परंतु आज लालच ही मुख्य प्रेरणा-द्वारा है। ऋषि-मुनि आध्यात्मिक मूल्यों को सर्वोच्च महत्व देते हैं। हिंदू धर्म के आध्यात्मिक मूल्यों का अनुक्रम है-धर्म, अर्थ, काप तथा मोक्ष। अर्थ तथा काप संसारिक मूल्य हैं, जबकि धर्म तथा मोक्ष आध्यात्मिक मूल्य हैं, परंतु धर्म का रथान सर्वदा प्रथम है। यह अर्थ तथा काप दोनों का प्रेरक तथा नियंत्रक है। जीवन के हिंदू दृष्टिकोण के अनुसार, सातिक सतीषिक ऊंचा आदर्श है। इसके बाद राजसी का स्थान है, जो एक आदर्श नहीं, परंतु सामाजिक आवश्यकता है। तामासिक सबसे अधिक अपमानजनक वृत्ति है, जिससे सभी बुद्धिमान दूर रहते हैं। मनु की पद्धति में सतत्व को न्याय की संज्ञा दी गई है, राजस को आकांक्षा की तथा तमस को इच्छाओं की। महापुरुषों ने चिंतन-मनन के मनुष्य के परम आनंद के रूप में देखा। आंतरिक शांति तथा आध्यात्मिक ज्ञान के लिए समर्पित जीवन ही मानव गतिविधियों का सबरेतम रूप है।

डेस्कोड चाहिए पर स्कूल में ...



संक्षिप्त
प्रेरणा

एक वृद्ध महिला एक सब्जी की दुकान पर जाती है, उसके पास सब्जी खरीदने के पैसे नहीं होते हैं। वो दुकानदार से प्रार्थना करती है कि उसे सब्जी उधार दे दे पर दुकानदार मना कर देता है। उसके बार-बार आग्रह करने पर दुकानदार खीज कर कहता है, तुम्हारे पास कुछ ऐसा है, जिसके कोई कीमत हो, तो उसे इस तराजू पर रख दो, मैं उसके बजन के बाबत सब्जी तुम्हें दे दूंगा। वृद्ध महिला कुछ देर सोच में पड़ जाती है। क्योंकि उसके पास ऐसा कुछ भी नहीं था। कुछ देर सोचने के बाद वह, एक मुड़ा-तुड़ा कागज का टुकड़ा निकालती है और उस पर कुछ लिख कर तराजू पर रख देती है। दुकानदार ये देख कर हँसने लगता है। फिर भी वह थोड़ी सब्जी उठाकर तराजू पर रखता है। आश्चर्यच्छा!!! कागज वाला पलड़ा नीचे रहता है और सब्जी वाला ऊपर उठ जाता है। इस तरह वो और सब्जी रखता जाता है पर कागज वाला पलड़ा नीचे नहीं होता। तांग आकर दुकानदार उस कागज को उठा कर पढ़ता है और हैरान रह जाता है। कागज पर लिखा था, हे श्री कृष्ण! तुम सर्वज्ञ हो, अब सब कुछ तुम्हारे हाथ में है। दुकानदार को अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था। वो उतनी सब्जी वृद्ध महिला को दे देता है। पास खड़ा एक अन्य ग्राहक दुकानदार को समझता है, कि दोस्त, आश्चर्य मत करो। केवल श्री कृष्ण ही जानते हैं कि प्रार्थना का क्या मोल होता है। वास्तव में प्रार्थना में बहुत शक्ति होती है। चाहे वो एक घंटे की हो या एक मिनट की। यदि सच्चे मन से की जाये, तो ईश्वर अवश्य सहयोग करते हैं।

आज का राशिफल

मेषः कानूनी सहयोग मिलेगा। लाभ में वृद्धि होगी। रुके कार्यों में गति आएगी। तंत्र-मंत्र में रुचि बढ़ेगी। सत्संग का लाभ मिलेगा। शेयर मार्केट से लाभ होगा। घर-बाहर पूछ-परख रहेगी। व्यापार में वृद्धि होगी। भाव्य का साथ रहेगा। थकान महसूस हो सकती है। आलस हावी रहेगा।

तुला : सामाजिक कार्य करने का मन बनेगा। महनत का फल मिलेगा। मान-सम्मान मिलेगा। निवेश शुभ होगा। व्यापार में बृद्धि होगी। भाग्य का साथ मिलेगा। नए काम करने की इच्छा बनेगी। प्रसन्नता रहेगी। विरावरिक सहयोग मिलेगा। मनोरंजन का वक्त मिलेगा। जोखिम व

सुप्रीम कोर्ट में ड्रेस कोड चाहिए पर स्कूल में...



आचार्य और डी. के. मराठेकॉलेज ने कैंपस में हिंजाब, नकाब, बुर्का, स्टोल और टोपी पहनने पर बैन लगाया था। इस निर्णय के विरोध में नौ लड़कियां बॉबे हाईकोर्ट पहुंची हाईकोर्ट से याचिका खारिज होने पर उन्होंने सुप्रीमकोर्ट में अपील की। सुप्रीम कोर्ट ने अंतर्रिम अद्वेशमें कॉलेज सुरक्षार लागू करने पर 18 नवंबर तक रोक लगाया दी। यहां जरिस्टस संजीव खन्ना और राजस्टिस संजय कुमार की पीठ का कहना रहा, स्टडेंट्स को क्या पहनना या क्या नहीं पहनना है, यह वही तर करेंगे। एजुकेशनल इंस्टीट्यूट स्टडेंट्स पर अपनी पसंद नहीं थोप सकते। पीठ ने मुस्लिम छात्रोंके लिए, ड्रेस कोड को लेकर जर्में नए विवाद केकेंद्र में आए कॉलेज प्रशासन से कहा छात्रोंको यह चयन करने की आजादी होनी चाहिए कि वे क्या पहनें और कॉलेज उन पर दबाव नहीं डाल सकता द्व्ययह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आपको अचानक पता चलता है कि देश में कई धर्म हैं। अगर कॉलेज का इरादाछात्रोंकी धार्मिक आस्था के प्रदर्शन पर रोकलगाना था, तो उसने तिलक और बिंदी पर प्रतिबंध क्यों नहीं लगाया? अब जरा उस सर्कुलर को भी देख लेते हैं, जोकॉलेज की ओर से जारी किया गया था, वस्तुतः इसमेंतीन बिन्दुओंमें बात रखी गई है एक-छात्रोंको परिसरमें औपचारिक और सभ्य पोशाक पहननी चाहिए। वेहाफ शर्ट या फुल शर्ट और ट्राउजर पहन सकते हैं लैंडिंगियां कोई भी भारतीय या पश्चिमी पोशाक पहनसकती हैं। छात्रोंको एसा कोई भी परिधान नहीं पहनना चाहिए जो धर्म या सांस्कृतिक असमानता को दर्शाता हो। नकाब, हिजाब, बुर्का, स्टोल, टोपी, बैज आदि को ग्राउंड फ्लोर पर कॉमन रूम में जाकर उतारना होगा और उसके बाद ही वे पूरे कॉलेजपरिसर में घूम सकते हैं। जींस, टी-शर्ट, रिवीलिंग ड्रेस और जर्सी की अनुमति नहीं है। दो-अपने व्याख्यान/प्रैक्टिकल के लिए समय से पहले पहुंचें। तीन-75% उपस्थिति अनिवार्य है। शिक्षा में अनुशासनसफलता की कुंजी है। यहां गहराई से देखने पर सामाजिक स्वीकृति केतहत पूरी तर मान्य किया गया है। फिर यह स्वीकृति इसलिए भी है क्योंकि भारत सिखआबादी 20.8 मिलियन है, जो की कुल संख्याका केवल 1.72% इसका अर्थ है कि एक कक्षामें एक छात्र अधिकतम दो ही मुश्किल से सिखाने किंतु क्या वह मुसलमानोंपर लागू हो। वहता देश की दूसरी सबसे बड़ी जनसंख्या है भारतीय सांविधानके अनुच्छेद 29, 35.0 तथा 35.0 बी में अल्पसंख्यक का प्रयोग किया गया है लेकिन इस परिभाषा कहीं नहीं दी गई। यह विंडबंकापूर्ण स्थिति है कि कहीं पर अल्पसंख्यक है और वहीं, किसी राज्य प्रतिशत आबादी वाले लोगबहुसंख्या और अल्पसंख्यक को मिलने वालेले विचित है। संयुक्त राष्ट्र की परिषदेके अनुसार, ऐसा समुदाय जिसकी सामाजिक, अर्थकातथा राजनीतिक से कोई प्रभाव न हो और जिसकी आनगण्य हो, उसे अल्पसंख्यक कहाजाएं।

जनता-जनार्दन का शुक्रिया

-શાન્દ મારી, પ્રધાનનત્ર

ताजमहल की दृदशा

विमान धूरा तरह से नाकाम ह। मुख्य गुण से पानी टपक रहा है, परिसर बंदरों के लिए

अभियानरथ बन गया है।
- अखिलेश यादव, सपा सांसद

भारतीय पर्यटन गति पकड़े

भारतीय पर्यटक एकोर्ड संख्या में विदेश

ਧਾਰਾ ਪੱਤੇ ਦੇ ਅਥਵਾ ਜਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਕਿ ਮਾਰਟੀਅਰ ਪਰਿਟਨ ਭੀ ਗਤਿ ਪਕਢੇ। ਅਨ੍ਯ ਤੋਂ ਤੋਂ ਸਾਡਾ ਅਤੇ ਸ਼ਾਖਾਵਾਂ ਦੀ ਸਾਡੀ

देश के पास परायन अवगता का ज्ञान
विविधता नहीं है, जितनी भारत के पास है।
-अनिल अग्रवाल, भारतीय उद्योगपति

केंद्रीय संस्कृत एवं विद्यालयों का प्रबन्धन

ਮੁੜੇ ਇਤਾ ਪਾਰ ਟੇਨੇ ਕੇ ਲਿਆ ਮੇਰੇ ਸਮੀ
ਪਾਣੀਥਾਂ ਕੋ ਬਹੁਤ-ਬਹੁਤ ਬਧਵਾਦ। ਪਿਛੇ
ਮਹੀਨੇ ਗੈ ਤੁਨਿਆਮਰ ਨੇ ਵੱਡੇ ਥੀਂ ਔਰ ਮਾਫ਼
ਆਯੋਗਨਾਂ ਆਇ ਕੇ ਲਿਆ ਯਾਕੀ ਇਤਨੇ
ਧਾਰ ਕੇ ਲਿਆ ਬਧਨ ਮਹਸੂਸ ਕਰ ਰਹੀ ਹੈ।



बदल रहा है घुमक्कड़ी का अंदाज

घुमक्कड़ी केवल एक मानवीय शौक नहीं, देश-दुनिया को समझने और संस्कृति-परिषदों को कटीब से जानने का एक जरिया भी है। हाल के वर्षों में जैसे जीवन के तगाम पक्षों ने बड़े बदलाव हुए हैं, ट्रैवलिंग के तरीके और ट्रैवलर्स की रुचियां भी बहुत

बदल गई हैं। घुमक्कड़ी का हर शौकीन इनके बारे में जरूर जानना चाहेगा।

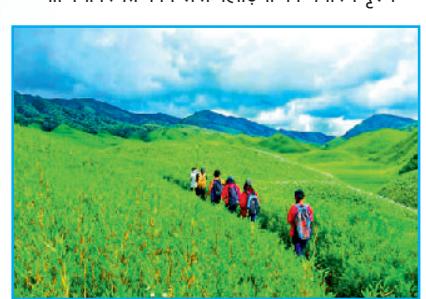
बदल रहा देशी पर्यटकों का निजाज

भारत के घेरेर पर्यटन में तो अब यह ट्रेंड भी है कि मार्यां केवल अपने बच्चों के साथ ही यात्राएं नहीं कर रही हैं बल्कि वह स्पेशल क्यूरेंट ट्रूट के विकल्प चुन रही हैं ताकि अपने बच्चों और साथी भाइयों के साथ बॉन्डिंग बेटर करने में मदद मिले और यात्रा लख्यों की पूर्ण भी हो सके। मसलन, दिन में एडवेंचर हाइक्स, मछली पकड़ना और अगमी नामा कबीलों की संस्कृति में रंग जाना और रातों को टिटुरती ठंड में आग के सामने बैठकर असमान के तारे गिनना। घुमक्कड़ी पसंद करने वाली छह मांओं और दो बच्चों की यह दिनचर्या है, जब वे जखाम के धान के खेतों के पास कैरिङ्ग कर रहे थे। जखाम, नागालैंड राज्य में एक यात्रा सा गांव है। ये मार्यां और उनके बच्चे देश के अलग-अलग हिस्सों से यहां आएं थे और यह खोनोमा में स्थानीय नामा अलग हिस्सों से यहां आएं थे और यह खोनोमा में स्थानीय नामा चाहते हैं।

परिवर्गों के साथ भी रहे। खोनोमा एशिया का पहला ग्रीन गांव है। इन सबने छोटे से गांव दुखुलेके की भी यात्रा की, जहां सिर्फ 35 घर हैं। ठीक उसी दौरान वहां से लगभग 3,700 किमी दूर दक्षिण भारत में कुछ टूरिस्ट मार्यां अपने बच्चों के साथ तमिलनाडु में कोडिकैनाल का आनंद ले रहे थे। प्राकृतिक झरनों, प्राचीन गुफाओं, शानदार गिरजाघरों को देखने के बाद अपनी यात्रा के तीसरे दिन इन सबने रोलिंग हिल्स और धूध भरे जंगल का नजारा करते हुए आपन-एपर कैफ में लंबं का आनंद लिया। गांडें में पिंकिनिंग मैट्स बिल्डिंग दिए गए थे, जिन पर बच्चों ने जेंगा और दूसरे कई खेल खेले।

घूमने के अलावा होते हैं कई उद्देश्य

मैंने इस बार कश्मीर की यात्रा वाहां की नैसर्गिक सुंदरता के साथ ही खान-पान की संस्कृति को और करीब से जानने-समझने के उद्देश्य से की थी। आयशा के बाग मंजुक की सैर पर भी यात्रा था। यह स्थान श्रीनगर से एक घंटे की ड्राइव पर पुलुवामा में स्थिर है। मंजुक का अर्थ होता है 'बागांचे' में कश्मीरी व्यंजनों की खासियत होती है कि इसमें कम से कम मसाले और सामग्री ढाली जाती है, लेकिन इनका स्वाद गजब का होता है। कहने का अर्थ है कि पर्यटन का एक बदलता रुद्धान अब अनुभवात्मक यात्रा भी होता जा रहा है। अब अधिकतर पर्यटक उन गतिविधियों की तलाश करते हैं, जिनसे स्थानीय संस्कृतियों, व्यंजनों और पंचायाँ को करीब से जान सकते हैं। या कहें पर्यटक, पर्यटक उन आकर्षणों से अलग हटकर अधिक वास्तविक और नए अनुभवों की तलाश कर रहे हैं। *



नागालैंड में दूर-दूर तक फैली मोहक हरियाली

जार्जिया है पर्फेक्ट ट्रूटिंगेशन

इस साल के विश्व पर्यटन दिवस की मेजबानी करने वाला जार्जिया देश भी पर्यटकों को एक ऐसा अनुभव प्रदान करता है, जो लीक से हटकता है। कॉकेशस पहाड़ों और ब्लैक सी की बीच में स्थित जार्जिया एक ऐसा दुपा हुआ खुबसूरत देश है, जिसका इतिहास, विश्व संस्कृति और सुंदर लैंडस्पैक पर्यटकों को अचरज से भर देते हैं। जार्जिया पर्यटकों को विशिष्ट अनुभव प्रदान करता है। आपको दिलचर्चाएं चाह इतिहास में हो या आप प्रकृति प्रेरी हो या आप टेस्टी फूड्स के द्वारा हो, जार्जिया में हर पर्यटक के लिए कुछ ना कुछ अवश्य है। यहां स्थानीय लोग मेहमानों का गर्मजोरी से स्वागत करते हैं। कहने की जरूरत नहीं कि जब लोग एक-दूसरे की संस्कृति, इतिहास, परंपरा और खान-पान के तरीके को समझने के लिए यात्रा पर निकलते हैं, तो इससे भी शांति स्थापित करने के प्रयासों को बल मिलता है, जो इस साल की थीम है। वैसे भी लोग उसी मुलक में पर्यटन पर जाना पसंद करते हैं, जिसमें शांति और सुरक्षा हो। इस लिहाज से जार्जिया पर्यटकों के लिए शानदार और सुरक्षित जगह है।

न्यू ट्रूटिंग का बढ़ता ट्रैक

खुशी की बात है कि कोविड-19 महामारी के दो-तीन वर्ष बाद बाद पर्यटन अपनी पहली जैसी स्थिति में लौट आया है और विश्व अर्थव्यवस्थ के प्रमुख स्तर भी में से एक हो गया है। अब पर्यटन केवल ऐतिहासिक स्थलों का प्रमाण नहीं है बल्कि यह विजनेस ट्रिप्स तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें जो नए ट्रैट्स आए हैं, उनमें स्लो ट्रैवल, सर्सेनेवल ट्रैवल, सिंचुअल रिट्रॉट्स और वेल्वींग जैसी यात्राओं के अतिरिक्त नए लाग्जों से मिलना, उनकी संस्कृति को समझना और उनके परंपरागत व्यंजनों का आनंद लेना भी शामिल हो गया है।

क्रिटिका का बढ़ता ट्रैक

खुशी की बात है कि कोविड-19 महामारी के दो-तीन वर्ष बाद बाद पर्यटन अपनी पहली जैसी स्थिति में लौट आया है और विश्व अर्थव्यवस्थ के प्रमुख स्तर भी में से एक हो गया है। अब पर्यटन केवल ऐतिहासिक स्थलों का प्रमाण नहीं है बल्कि यह विजनेस ट्रिप्स तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें जो नए ट्रैट्स आए हैं, उनमें स्लो ट्रैवल, सर्सेनेवल ट्रैवल, सिंचुअल रिट्रॉट्स और वेल्वींग जैसी यात्राओं के अतिरिक्त नए लाग्जों से मिलना, उनकी संस्कृति को समझना और उनके परंपरागत व्यंजनों का आनंद लेना भी शामिल हो गया है।

क्रिटिका का बढ़ता ट्रैक

खुशी की बात है कि कोविड-19 महामारी के दो-तीन वर्ष बाद बाद पर्यटन अपनी पहली जैसी स्थिति में लौट आया है और विश्व अर्थव्यवस्थ के प्रमुख स्तर भी में से एक हो गया है। अब पर्यटन केवल ऐतिहासिक स्थलों का प्रमाण नहीं है बल्कि यह विजनेस ट्रिप्स तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें जो नए ट्रैट्स आए हैं, उनमें स्लो ट्रैवल, सर्सेनेवल ट्रैवल, सिंचुअल रिट्रॉट्स और वेल्वींग जैसी यात्राओं के अतिरिक्त नए लाग्जों से मिलना, उनकी संस्कृति को समझना और उनके परंपरागत व्यंजनों का आनंद लेना भी शामिल हो गया है।

क्रिटिका का बढ़ता ट्रैक

खुशी की बात है कि कोविड-19 महामारी के दो-तीन वर्ष बाद बाद पर्यटन अपनी पहली जैसी स्थिति में लौट आया है और विश्व अर्थव्यवस्थ के प्रमुख स्तर भी में से एक हो गया है। अब पर्यटन केवल ऐतिहासिक स्थलों का प्रमाण नहीं है बल्कि यह विजनेस ट्रिप्स तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें जो नए ट्रैट्स आए हैं, उनमें स्लो ट्रैवल, सर्सेनेवल ट्रैवल, सिंचुअल रिट्रॉट्स और वेल्वींग जैसी यात्राओं के अतिरिक्त नए लाग्जों से मिलना, उनकी संस्कृति को समझना और उनके परंपरागत व्यंजनों का आनंद लेना भी शामिल हो गया है।

क्रिटिका का बढ़ता ट्रैक

खुशी की बात है कि कोविड-19 महामारी के दो-तीन वर्ष बाद बाद पर्यटन अपनी पहली जैसी स्थिति में लौट आया है और विश्व अर्थव्यवस्थ के प्रमुख स्तर भी में से एक हो गया है। अब पर्यटन केवल ऐतिहासिक स्थलों का प्रमाण नहीं है बल्कि यह विजनेस ट्रिप्स तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें जो नए ट्रैट्स आए हैं, उनमें स्लो ट्रैवल, सर्सेनेवल ट्रैवल, सिंचुअल रिट्रॉट्स और वेल्वींग जैसी यात्राओं के अतिरिक्त नए लाग्जों से मिलना, उनकी संस्कृति को समझना और उनके परंपरागत व्यंजनों का आनंद लेना भी शामिल हो गया है।

क्रिटिका का बढ़ता ट्रैक

खुशी की बात है कि कोविड-19 महामारी के दो-तीन वर्ष बाद बाद पर्यटन अपनी पहली जैसी स्थिति में लौट आया है और विश्व अर्थव्यवस्थ के प्रमुख स्तर भी में से एक हो गया है। अब पर्यटन केवल ऐतिहासिक स्थलों का प्रमाण नहीं है बल्कि यह विजनेस ट्रिप्स तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें जो नए ट्रैट्स आए हैं, उनमें स्लो ट्रैवल, सर्सेनेवल ट्रैवल, सिंचुअल रिट्रॉट्स और वेल्वींग जैसी यात्राओं के अतिरिक्त नए लाग्जों से मिलना, उनकी संस्कृति को समझना और उनके परंपरागत व्यंजनों का आनंद लेना भी शामिल हो गया है।

क्रिटिका का बढ़ता ट्रैक

खुशी की बात है कि कोविड-19 महामारी के दो-तीन वर्ष बाद बाद पर्यटन अपनी पहली जैसी स्थिति में लौट आया है और विश्व अर्थव्यवस्थ के प्रमुख स्तर भी में से एक हो गया है। अब पर्यटन केवल ऐतिहासिक स्थलों का प्रमाण नहीं है बल्कि यह विजनेस ट्रिप्स तक सीमित नहीं है बल्कि इसमें जो नए ट्रैट्स आए हैं, उनमें स्लो ट्रैवल, सर्सेनेवल ट्रैवल, सिंचुअल रिट्रॉट्स और वेल्वींग जैसी यात्राओं के अतिरिक्त नए लाग्जों से मिलना, उनकी संस्कृति को समझना और उनके परंपरागत व्यंजनों का आनंद लेना भी शामिल हो गया है।